कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में सोशल मीडिया के अनुप्रयोग

प्रो0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग, डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र

डिजिटल क्रांति,उच्च प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस युग में जब तकनीकी हमें एक दूसरे से जोड़ रही है, तब जुड़ने और जोड़ने की प्रक्रिया एवं परिवर्तित होती स्थितियों पर बहस होने साथ मतभिनंता भी हो सकती है, लेकिन इससे कोई इनकार नहीं कर सकता कि इस जुड़ाव में भी भाषा की ताकत बची हुई है। वर्तमान परिदृश्य में डिजिटल डेमोक्रेसी की राह दुनिया भर के देशों के लिए आसान नहीं है। "सोशल मीडिया पर दुनिया भर में लगातार प्रतिबंध लगाए जाते रहे हैं। मसला चाहे कभी राष्ट्रीय सुरक्षा का होता है तो कभी किसी राजनेता की मानहानि का। कभी सामाजिक समरसता के बिगड़ने की समस्या होती है तो कभी धार्मिक ताने–बाने को आघात लगता है। परंतु जिस प्रकार परंपरागत या मुख्य धारा के मीडिया को सत्ताएँ लोभ और प्रतिबंध की दोहरी जंजीर से बाँध कर रखती हैं, वैसा नए मीडिया के साथ कर पाना पूर्णता संभव नहीं है।"[1]

वर्तमान परिदृश्य में डिजिटल डेमोक्रेसी की राह दुनिया भर के देशों के लिए आसान नहीं है। सोशल मीडिया पर दुनिया भर में लगातार प्रतिबंध लगाए जाते रहे हैं। मसला चाहे कभी राष्ट्रीय सुरक्षा का होता है तो कभी किसी राजनेता की मानहानि का। कभी सामाजिक समरसता के बिगड़ने की समस्या होती है तो कभी धार्मिक ताने–बाने को आघात लगता है। परंतु जिस प्रकार परंपरागत या मुख्यधारा के मीडिया को सत्ताएँ लोभ और प्रतिबंध की दोहरी जंजीर से बाँध कर रखती हैं, वैसा नए मीडिया के साथ कर पाना पूर्णता संभव नहीं है"[2]

आज के परिप्रेक्ष्य में सोशल मीडिया पर प्रेमचंद का कथन प्रासंगिक हो रहा है कि 'मनुष्य में मेल–मिलाप के जितने साधन हैं, उसमें सबसे मजबूत, असर डालने वाला रिश्ता भाषा का है' सोशल मीडिया के सम्बंध में प्रेमचंद का यह वक्तव्य आज सार्थक और कालजयी सिद्ध हो रहा है। वर्तमान समय में श्रव्य–दृश्य के मायावी संजाल के बावजूद सोशल मीडिया का प्रयोकत्ता शब्द की ताकत को अच्छी तरह से जानता है। अनेक ऐसे वक्तव्य और नीति वाक्य लोगों की प्रेणना के श्रोत बन जाते हैं– उदाहरण के लिए–'शब्दों का भी तापमान होता है, यह सुकून भी देते हैं और जला भी देते हैं।' कुछ समय पहले सोशल मीडिया पर यह है पोस्ट देखी और पढ़ी गई थी जो खूब वायरल हुई। सोशल मीडिया पर हिंदी की शक्ति और सामर्थ्य,नए तरीके से दर्ज हो रही है। हिंदी की शक्ति ने सोशल मीडिया के मंच पर व्यक्ति की रचनात्मकता और सर्जनात्मकता को नए पंख लगा दिए हैं।

वासुदेव शरण अग्रवाल ने अपने निबंध 'शब्दों का देश' में लिखा है कि 'अर्थ की महिमा से शब्दों को प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और शब्द अपने–अपने युग के प्रतिनिधि बनकर उस काल की गाथा हमें सुनाते हैंद्य आज सोशल मीडिया हिंदी संसार के लिए सर्जनात्मक अनुचिंतन का निर्माण करने वाली अनंत क्रियाओं और छवियों का साक्षी है। उस पर सृजित शब्दों का संसार अपने तरीके से इस युग की गाथा सुना रहा है। जिसका विधेयात्मक पक्ष यह है कि इसने सब की सर्जनशीलता को मुक्त भाव से स्वीकार करने का

वैश्विक मंच प्रदान किया है। सर्जनात्मकता के दो पक्ष होते हैं–एक पक्ष जीवन की वास्तविकताओं से जुड़ाता है तो दूसरा पक्ष मनुष्य के अंतर्मन के प्रसार से। "आज सामयिक जीवन की सच्चाइयों से टकराता–जूझता व्यक्ति अपने मन की छटपटाहट, दुःख दर्द की अभिव्यक्ति के लिए सोशल मीडिया को अंतर्मन के प्रसार का जरिया बना रहा है। अब हर व्यक्ति अखबार नवीस की भूमिका में है। सोशल मीडिया ने अनेक कहानीकार और कवि पैदा किए हैं। आज अगर कोई कविता, कहानी, लघुकथा लिखता है तो उसे किसी संपादक या प्रकाशक का मुखापेक्षी होने की जरूरत नहीं है। सोशल मीडिया एक ऐसा राजमार्ग है, जहाँ कोई टोल नहीं है, कोई भी अपनी गाड़ी ले जा सकता है।छोटी बड़ी कैसी भी। सोशल मीडिया सूर्य किरणों या धूप की तरह है, जिसमें कई तरह के रंग हैं"[3] वर्तमान समय में सोशल मीडिया सर्जन का, आलोचना का, साहित्य का, पत्रकारिता का ऐसा उदार मंच हो गया है, जो भिन्न–भिन्न किस्म की आवाजें दर्ज करने से इनकार नहीं करता। सहमति की आवाजें,असहमति की आवाजें,व्यवस्था समर्थन की आवाजें,व्यवस्था असमर्थन की आवाजेंद्य यहां रचना के लोकतंत्र का आभास है। तुरंत लिखे को सोशल मीडिया पर डालकर लोग लाइक बटोर कर अपना उत्साह और हौसला बढ़ा रहे हैं और इसी हौसले की उड़ान से हिंदी को भी पंख मिल रहे हैं।

किसी भी विषय के दो महत्वपूर्ण पक्ष हो सकते हैं–एक सकारात्मक तो दूसरा नकारात्मक। इस दृष्टि से सोशल मीडिया को देखने के कई पक्ष हो सकते हैं। जिस प्रकार एक सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार सोशल मीडिया के भी कई पक्ष हैं जो इस प्रकार हैं–सोशल मीडिया का प्रभाव, दूसरा यह बहुत तेज गति से होने वाला संचार का माध्यम है, यह जानकारी को एक ही जगह इकट्ठा करता है, सरलता से सूचनाओं प्रदान करता है। सोशल मीडिया सभी वर्गों के लिए है जैसे कि शिक्षित वर्ग हो या अशिक्षित वर्ग। यहाँ किसी प्रकार से कोई भी व्यक्ति किसी भी कंटेंट का मालिक नहीं होता है। सोशल मीडिया में फोटो, वीडियो, सूचना, डॉक्यूमेंट आदि को आसानी से शेयर किया जा सकता है। पाराशर फाउंडेशन की ओर से पटना में आयोजित एक परचर्चा में विशेषकों का कहना था कि यह लोगों पर निर्भर है कि वह इसका इस्तेमाल कैसे, किस लिए और कितनी देर करते हैं। किसी भी चीज की लत अच्छी नहीं होती है। उदहारण के तौर पर अनेक स्थानों पर महज इस आधार पर सम्बंध टूट रहे हैं और यहाँ तक कि हत्याएँ हो रहीं हैं की वह सोशल नेटवर्किंग साइटों पर ज्यादा वक्त गुजारते हैं। और इस वजह से संबंधों में खटास और संदेह उत्पन्न हो रहे हैं। विशेषज्ञों की राय है कि सोशल मीडिया के जमाने में निजी डेटा की कोई गोपनीयता न रहने की वजह से शादी नाम की खूबसूरत संस्था खतरे में पड़ रही है। सोशल मीडिया की वजह से जीवनसाथी के परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों एवं सम्मान में लगातार कमी आ रही है। देश दुनिया के कई महानगरों में अब शादी के अनेक ऐसे दिलचस्प विज्ञापन भी सामने देखने को आ रहे हैं जिसमें लिखा जा रहा है की भावी बधू को फेसबुक और सोशल मीडिया का नशा न हो तो बेहतर ही है।

मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि "सोशल मीडिया के जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल से एकाग्रता प्रभावित होती है और कामकाजी समय का भी नुकसान होता है। मनोवैज्ञानिकों का यह भी मानना है कि इसकी वजह से पहचान चुराने, साइबर फ्रॉड, साइबर बुलिंग, हैकिंग और वायरस हमले की घटनाएँ भी लगातार बढ़ रही हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि शहरी परिवारों में तो सोशल मीडिया रिश्तो की संस्कृति को नए सिरे से परिभाषित कर रहा है, लेकिन फिलहाल शहरों और गांव के बीच बटे परिवार (यानी जो रोजगार के सिलसिले में शहर में हों लेकिन उनके संयुक्त

परिवार के लोग गांव में रहते हों) इस मामले में संक्रमण काल के दौर से गुजर रहे हैं। एक समाजशास्त्र के प्राध्यापक का मानना है कि 'लोगों को समझना होगा कि इंटरनेट का मतलब सिर्फ सोशल मीडिया ही नहीं है। सोशल मीडिया सूचनाओं का भंडार है, ऐसे में सोच समझकर परंपरागत रिश्तों के साथ तालमेल बिठाकर इसका इस्तेमाल करना ही बेहतर हैद्य कुछ लोग जाने या अनजाने सोशल मीडिया का गलत उपयोग भी करते हैं। ऐसे लोग दुर्भावनाएँ फैलाकर आपस में सामाजिक सौहार्द्र को बिगाड़कर लोगों को आपस में बाँटने की कोशिश कर रहे हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से भ्रामक और नकारात्मक जानकारी साझा की जाती हैं जिससे की जनमानस पर तेजी से प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। कई बार तो ऐसी स्थिति पैदा हो जाती है कि सरकार को सोशल मीडिया के गलत इस्तेमाल पर सख्ती बरतनी पड़ती है। इसमें अनेक बार देश के विभिन्न स्थानों और प्रान्तों में घटित होने वाली घटनाओं से उत्पन्न किसी उपद्रव व असामान्य परिस्थिति से निपटने के लिए सोशल मीडिया पर प्रतिबंध तक लगाना पड़ा हैद्य उदहारण के लिए "मध्य प्रदेश, दिल्ली और महाराष्ट्र में हुए किसान आंदोलन में भी सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगा दिया गया था ,ताकि असामाजिक तत्व इस आंदोलन की आड़ में किसी बड़ी घटना को अंजाम न दे पाएँ। अनुच्छेद 370 में संशोधन और 35 ए हटाने के बाद जम्मू कश्मीर में करीब दो महीने तक इंटरनेट सेवा एहतियातन बाधित रखी गई।"[4]

सोशल मीडिया के कई एप्स ने वर्तमान समय में सूचनाओं का विस्फोट कर दिया है। जैसा कि आमतौर पर देखा गया है कि फेसबुक ने संपूर्ण साहित्यिक जगत को एक मंच पर लाकर खड़ा कर दिया है। आज के दौर में सोशल मीडिया के द्वारा लेखक, कवि अपने पाठकों के इतने नजदीक पहुंच गए हैं कि हाथों–हाथ प्रति उत्तर प्राप्त हो रहे हैं। नए मीडिया इस इस दौर में पाठकों, साहित्यकारों, संपादकों तथा प्रकाशकों की आपसी दूरियाँ बहुत कम हो गईं हैं। यह एक ऐसा सोशल मीडिया का प्रभाव है जो साहित्य के सुनहरे भविष्य के लिए आश्वस्त करता है। आज छोटे ,मझोले और प्रतिष्ठित साहित्यकार, व्हाट्सएप, यूट्यूब और ट्विटर पर अपनी रचनाओं का प्रचार–प्रसार कर रहे हैंद्य व्हाट्सएप ग्रुप से साहित्यकार दूसरे की रचनाओं को पढ़कर उनकी खूबियों, खामियों पर विचार अभिव्यक्त कर रहे हैं, तो दूसरी ओर ट्विटर पर अपने प्रिय लेखकों के विचार पढ़कर उसका प्रतिउत्तर भी दे रहे हैं। हिंदी भाषा में यूट्यूब पर भी कहानियों/कविताओं के कई ऑडियो–वीडियो डाउनलोड किए गए हैं और प्रतिदिन नए अपलोड भी हो रहे हैं। जिन्हें सुनने–देखने वाले पाठकों की निरंतर वृद्धि हो रही है। निसंदेह यह कहा जा सकता है कि "सोशल मीडिया आज हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन कर रहा है। एक ओर जब उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में ,जहाँ भारतीय भाषाओं के प्रयोग की लगभग उपेक्षा की जाती थी,ऐसी स्थिति में अब हिंदी सम्मानजनक स्थान प्राप्त करती जा रही है। इसमें कोई दो राय नहीं कि रेडियो, टीवी तथा पत्र–पत्रिकाओं में हिंदी में विज्ञापन देने की होड़ सी लगी रहती है। इन तथ्यों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि अब हिंदी को देशव्यापी स्वीकार्यता मिल चुकी है। और वह समय दूर नहीं जब हिंदी पूर्ण रूप से भारत की एकमात्र भाषा संपर्क के रूप में स्थापित हो जाएगी।"[5] एक रिसर्च के अनुसार मास मीडिया ने प्रिं,ट रेडियो, टी.वी. आदि को पीछे छोड़ते हुए सोशल मीडिया ने अल्प समय में साथ गुना अधिक रास्ता तय कर लिया है, जितना कि अभी तक किसी मीडिया ने तय नहीं किया है। भारत में ,महिलाओं के खिलाफ हो रहे अत्याचार, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, लाल फीताशाही, सरकारी योजनाएँ और जमीनी हकीकत को आम

जनता के बीच लाने के लिए, सोशल मीडिया का जमकर इस्तेमाल कर रहे हैं।

जितनी सारी चुनौतियों के बीच हाल के कुछ एक वर्षों में भारतीयों ने सोशल मीडिया की बढ़त और परिपक्वता को नजदीक से महसूस किया। एक सोशल मीडिया विश्लेषक के अनुसार जब सभी कुछ कार्य करना बंद कर देता है या दूसरे शब्दों में हम कहें कि सभी चीजों से हम निराश हो जाते हैं, तो हम सोशल मीडिया का सहारा लेते हैं और वर्चुअल मीडिया के विश्वव्यापी प्रभाव के कारण हमें अपने प्रयासों में सफलता मिलती है। वैसे गौर करें तो भारत में इंटरनेट की उम्र अभी दो दशकों की है लेकिन इसने रोजाना की कई परेशानियों का हल पेश कर दिया है और आज आम लोग भी संदेशों की आवा–जाई से लेकर ऑनलाइन शॉपिंग ,विलों का भुगतान जैसे कई तरीके की जरूरत का काम इन्टरनेट के जरिए निपटा रहे हैंद्य इतना ही नहीं ,जिन लोगों के पास इंटरनेट का उपयोग करने के साधन मौजूद है, गूगल, फेसबुक,, ट्विटर, यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया के तमाम मंचों ने उनके हाथ में नई ताकत दे दी।

लोकसभा चुनाव से पहले मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और मिजोरम में वृहद स्तर पर सोशल मीडिया का इस्तेमाल हुआ था। निर्वाचन आयुक्त के नेतृत्व में एक समिति ने गूगल, फेसबुक, ट्विटर के क्षेत्रीय व स्थानीय प्रमुखों के साथ इस संबंध में विस्तृत चर्चा की थी। फेसबुक, ट्विटर,यूटूब जैसे सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट और विभिन्न एप्लीकेशन आज लोगों की जिंदगी का अहम् हिस्सा बन गए हैं। यदि इन सभी से आदमी थोड़ी देर के लिए भी दूर होता है तो वह बेचौन हो जाता है। शुरुआत में सोशल मीडिया यानी न्यू मीडिया का मकसद लोगों को एक दूसरे से जोड़ने के साथ ही संचार माध्यम को मजबूती देना था। अपने इस मकसद में सोशल मीडिया को सफलता भी मिली ,लेकिन साथ ही सोशल मीडिया ने सामाजिक संबंधों को भी प्रभावित किया है। हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, दूसरे पहलू के रूप में सोशल मीडिया ने लोगों के संबंधों में दखल किया है।''[6]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हमारा समय, संस्कृति और नया मीडिया–राकेश कुमार–अनामिका पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली 2020,पृष्ठ संख्या 240 से 250
2. हमारा समय, संस्कृति और नया मीडिया–राकेश कुमार–अनामिका पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली 2020,पृष्ठ संख्या 240 से 250
3. विश्व हिंदी सम्मेलन, फिजी 2023–स्मारिका–प्रधान संपादक–रजनीश कुमार शुक्ला–विदेश मंत्रालय, भारत सरकार–2023,पृष्ठ संख्या 136
4. मीडिया का वर्तमान परिदृश्य–राकेश प्रवीर– ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली 2020,पृष्ठ संख्या–152
5. राजभाषा भारती, जनवरी 2023,पृष्ठ संख्या 50
6. मीडिया का वर्तमान परिदृश्य–राकेश प्रवीर–ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली 2020, पृष्ठ संख्या167